गणपति आरती

पद १

सुखकर्ता दुःखहर्ता वार्ता विघ्नाची।
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची॥
सर्वांगीं सुन्दर उटी शेंदूराची।
कंठीं झळके माळ मुक्ताफळांची॥

जयदेव जयदेव जय मंगलमूर्ति ओ श्री मंगलमूर्ति।
दर्शनमात्रें मनकामना पुरती, जयदेव जयदेव॥

हे प्रभु, आप सर्व सुखों के दाता हैं
और सर्व दुःखों को हरने वाले हैं।
आपकी कृपा से समस्त विघ्न दूर हो जाते हैं,
और आप हम पर अपनी कृपा व प्रेम की वर्षा करते हैं।
हे गणपति भगवान, आपके सर्वांग पर सुगन्धित सिन्दूर का लेप लगा है,
और आपके कण्ठ में मोतियों की माला सुशोभित है।

हे मंगलमूर्ति गणपति देव, आपकी जय हो!
आपके दर्शन मात्र से, हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

पद २

रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा।
चंदनाची उटी कुंकुमकेशरा॥
हिरेजडित मुकुट शोभतो बरा।
रुणझुणती नूपुरें चरणीं घागरिया॥
जयदेव जयदेव॥

जयदेव जयदेव जय मंगलमूर्ति ओ श्री मंगलमूर्ति।
दर्शनमात्रें मनकामना पुरती, जयदेव जयदेव॥

हे गौरीनन्दन, आप रत्नजड़ित सिंहासन पर विराजमान हैं
और आपके भाल पर चन्दन, केशर व कुमकुम लगा हुआ है।
आपके शीश पर हीरों से जड़ित मुकुट शोभायमान है,
आपका स्वरूप अत्यन्त भव्य है,
और आपके चरणों में शोभायमान नूपुरों के स्वर
अत्यन्त सुमधुर व सुरीले हैं।

हे मंगलमूर्ति गणपति देव, आपकी जय हो!
आपके दर्शन मात्र से, हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

पद ३
लंबोदर पीतांबर फणिवरबंधना।
सरळ सोंड वक्रतुंड त्रिनयना॥
दास रामाचा वाट पाहे सदना।
संकटीं पावावें निर्वाणीं रक्षावें सुरवरवंदना॥
जयदेव जयदेव॥

जयदेव जयदेव जय मंगलमूर्ति ओ श्री मंगलमूर्ति।
दर्शनमात्रें मनकामना पुरती, जयदेव जयदेव॥

हे गणेश भगवान, आपका उदर विशाल है,
आपने पीताम्बर धारण किया है
और नागराज आपके कटिबन्ध के रूप में लिपटे हुए हैं;
आपके तीन नेत्र हैं, आपकी सूँड़ सीधी है
और मुख वक्र है।

मैं अपने हृदय में आपके दर्शन करने के लिए लालायित हूँ।
हे प्रभु, आप देवताओं द्वारा वन्दित हैं।
कृपया, संकट के समय में आप मेरी रक्षा करें।
मेरे निर्वाण के समय [अन्त समय] में मेरे साथ रहें।

हे मंगलमूर्ति गणपति देव, आपकी जय हो!
आपके दर्शन मात्र से, हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

डिज़ाइन व अंग्रेज़ी भाषान्तर : © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।